AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

विदुर नीति के दर्पण में श्रेष्ठपुरुष

ORIGINAL ARTICLE

Author

पुरुषोत्तम कुमार सिंह
शोध छात्र
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय
हजारीबाग, झारखंड, भारत

शोध सार

विदुर नीति एक ऐसा दर्पण है जो लोगों को उसके वास्तविक स्वरूप दिखता है क्योंकि इसमें महात्मा विदुर ने श्रेष्ठ पुरुष का निर्धारण हेतु पुरुष के समस्त गुण एवं अवगुण को बताया है। प्रत्येक पुरुष को उन समस्त अवगुणों को त्याग कर गुणों को व्यवहार में अपनाना चाहिए। विदुर जी महाराज कहते है. काम, क्रोध, लोभ, ये आत्मा का नाश करने वाले तीन दरवाजे हैं, अतः इन तीनों का त्याग देने वाला पुरुष ही श्रेष्ठ है। जो धनी होने पर भी दान न दे और दरिद्र होने पर भी कष्ट सहन न कर सके इन दो प्रकार के मनुष्यों को गले में मजबूत पत्थर बांधकर पानी में डुबा देना चाहिए। जो अपना आदर होने पर हर्ष के मारे फूल नहीं उठता, अनादर से संतप्त नहीं होता तथा गंगा जी के ह्रदय के समान जिसके चित्त कभी क्षोभ नहीं होता, वह पंडित श्रेष्ठ पुरुष कहलाता है। जो शत्रु को मित्र बनाता है और मित्र से द्वेष करता है, सदा बुरे कर्मों में तत्पर रहता है वह महामूर्ख होता है। अमित्रं कुरुते मित्रं मित्रं द्वेष्टि हिनस्ति च। कर्म चाहते दुष्टों तमाहुर्मूढचेतसम्।। (विदुर नीति 1/33) आदि विभिन्न प्रकार से विदुर जी महाराज श्रेष्ठ पुरुष का लक्षण करते हैं जो आधुनिक दृष्टिकोण से अत्यंत प्रासंगिक है। श्रेष्ठ पुरुष के लक्षणों को हमें आत्मसात् करना चाहिए साथ ही महामूर्ख के कुलक्षणों को सर्वथा परित्याग कर देना चाहिए।

मुख्य शब्द

विदुर, आत्मज्ञान, दुःख सहनशीलता, स्मृधिरस्मृधिर्वा, नीति, श्रेष्ठपुरुष.

भूमिका

धर्मे च अर्थे च कामे च मोक्षके च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।।
(स्वर्गारोहण पर्व – 5/50)

महाभारत एक ज्ञान का सागर है जिसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के विषय व्याप्त है। महाभारत विशाल ग्रंथ में उन सारे वस्तुओं का वर्णन मिलता है जो वस्तु संसार में विद्यमान है। जिस विषय वस्तु का वर्णन महाभारत में नहीं है वह विषय वस्तु भी संसार में भी नहीं है।

महाभारत 18 पर्वों में विभक्त है जिसके उद्योग नामक पांचवें पर्व में ज्ञान की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण प्रसंग धृतराष्ट्र विदुर संवाद आता है जो संवाद विदुर नीति के नाम से जाना जाता है।

पांडव अपने 12 वर्ष का वनवास और 1 वर्ष का अज्ञातवास काट कर द्युतक्रीडा में छल से हारे हुए अपने राज्य को धृतराष्ट्र से मांगते हैं परंतु धृतराष्ट्र पुत्रमोह और राज्यमोह के वशीभूत होकर उचित और अनुचित का निर्णय नहीं कर पाते हैं। उनका मन पूरा व्यथित और अशांत हो गया है तो उसने सहायता हेतु विदुर को बुलाया और कहा. तात! मैं चिंता से जलता हुआ अभी तक जाग रहा हूं, मेरे लिए जो कल्याण की बातें समझो वह कहो क्योंकि हम लोगों में तुम ही धर्म और अर्थ के ज्ञान में निपुण हो।

जाग्रतो दह्यमानस्य श्रेयो यदनुपश्यति।
तद् ब्रूहि त्वं हि नस्तात धर्मार्थकुशलो ह्यसि।।
(विदुर नीति – 1/11)

धर्मात्मा विदुर धर्म, अर्थ, गुण, दोष आदि के तत्वज्ञ थे। इनके द्वारा उपदेशित संदेश समाज के प्रत्येक आश्रम और वर्णों के लिए प्रासंगिक है, क्योंकि विदुर ने एक मनुष्य के अंदर निहित गुण, दोष, कर्तव्य, अकर्तव्य, मनुष्य के आंतरिक एवं बाह्य मित्रता और शत्रुता, शुभकर्मफल, अशुभकर्मफल, पंडित के गुण, मूर्ख के गुण आदि के विषय में बताया है। इस समाज में रह रहे प्रत्येक व्यक्ति, राजा, प्रजा, मित्र, शत्रु, सेवक, भक्त कार्य और अकार्य आदि के विषय में विदुर ने बताये है।

पण्डित या श्रेष्ठ पुरुष का लक्षण करते हुए विदुर जी कहते है। पण्डित (श्रेष्ठ पुरुष) वह है जो आत्मज्ञान, परिश्रम, दुख, सहनशीलता और धर्म में स्थिरता, ये मार्ग कभी नहीं छोड़ता पंडित कहलाता है।

आत्मज्ञान समारम्भस्तितिक्षा धर्मनित्यता।
यमर्थथन्नापकर्षति से वै पण्डित उच्यते।।

जो जो अच्छे कर्मों का सेवन करता है और बुरे कर्मों से दूर रहता है वह पंडित है।

निषेवते प्रस्तावित निन्दातानि न सेवते।।
विदुर नीति – 1/16

जो क्रोध, हर्ष, गर्व, लज्जा, उदण्डता तथा अपने आप को पूजनीय समझें इन पुरुषार्थों से भ्रष्ट न हो, पंडित कहलाता है।

क्रोधो हर्षश्च दर्पश्च ह्रीं स्तम्भों मान्यमानिता।
यमर्थान्नपकर्षन्ति से वै पण्डित उच्यते।।

जो सर्दी–गर्मी, भय–अनुराग, सम्पत्ति अथवा दरिद्रता से विघ्न नहीं होता है, वह श्रेष्ठ पुरुष पण्डित है।

यस्य कृत्यं विघ्नन्ति शीतमुष्णं भयं रतिः।
स्मृद्धिरस्मृद्धिर्वा सा वै पण्डित उच्यते।।
विदुर नीति – 1/19

विद्वान पुरुष किसी विषय को देर तक सुनता है किंतु शीघ्र ही समझ लेता है। समझ का कर्तव्य बुद्धि से पुरुषार्थ मे प्रवृत होता है, कामना से नहीं। बिना पूछे दूसरे विषय में व्यर्थ कोई बात नहीं कहता है, वह पंडित है।

क्षिप्रं विजानाति चिरं श्रृणोति
विज्ञाय चार्ज भजते न कामात्।
नासम्पृष्टो व्युपयुङ्क्ते परार्थे
तत् प्रज्ञानं प्रथमं पण्डितस्य।।
(विदुर नीति – 1/22)

जो पहले निश्चय करके फिर कार्य का आरंभ करता है कार्य के बीच में नहीं रुकता है, समय को नहीं जाने देता है और चित्त को वश में रखता है, वही पंडित कहलाता है।

निश्चित्य य प्रकमते नान्तर्वसयति कर्मणः।
अवन्ध्य कालो वश्यात्मा स वै पण्डित उच्यते।।
(विदुर नीति – 1/24)

जिसकी वाणी कहीं रुकती नहीं, जो विचित्र ढंग से बातचीत करता है, तर्क में निपुण और प्रतिभाशाली है तथा जो ग्रंथ के तात्पर्य को शीघ्र बता सकता है वह पंडित है।

प्रवृत्तवाक् चित्रकथ ऊहवान् प्रतिभावान्।
आशु ग्रंथस्य वक्ता च यः स पण्डित उच्यते।।
(विदुर नीति – 1/28)

इस प्रकार विदुर जी महाराज ने विभिन्न गुण बता कर श्रेष्ठ पुरुष पण्डित का लक्षण किया है।

यः सर्वं जानाति सरू पण्डितः

जो पुरुष संसार के संपूर्ण वास्तविक ज्ञान (कर्तव्य, अकर्तव्य, उचित, अनुचित, गुण, दोष आदि) को जानता है, वह पंडित अथवा श्रेष्ठ पुरुष है।

अब विदुर जी महाराज मूर्ख व्यक्ति का लक्षण करते हुए कहते हैं कि हे महाराज धृतराष्ट्र! जो बिना पढ़े ही गर्व करता है, दरिद्र होकर भी बड़े–बड़े मनोरथ की कामना करता है, बिना काम किया ही धन पाने की इच्छा रखता है, वह मनुष्य मूर्ख है।

अश्रुतश्च समुन्नद्धो दरिद्रश्च महामनाः।
अर्थाश्चचाकर्मणा प्रेप्सुर्मूढ इत्युच्यते बुधैः।।
(विदुर नीति – 1/30)

मूर्ख मनुष्य न चाहने वालों को चाहता है, चाहने वालों को त्याग देता है और अपने से बलवान् के साथ शत्रुता रखता है। जो शत्रु को मित्र बनाता है और मित्र से द्वेष करता हुआ उसे कष्ट पहुँचाता है, सदा बुरे कर्मों का आरंभ करता है, वह मूर्ख व्यक्ति हैं।

असामान्य कामयति यः कामयानान् परित्यजेत्।
बलवन्तं च यो द्वेष्टि तमाहुर्मूढचेतसम्।।
(विदुर नीति – 1/32)
अमित्रं कुरुते मित्रों द्वेष्टि हिनस्ति च।
कर्म चाहते दुष्टों तमाहुर्मूढचेतसम्।।
(विदुर नीति – 1/33)

जो पितरों का श्राद्ध और देवताओं का पूजन नहीं करता तथा जो सुहृद् मित्र को नहीं मिलता है वह मूढ़ चित्तवाला कहलाता है।

श्राद्धं पितृभ्यो न ददाति देवतानि न चार्चति।
सुहृन्मित्रं न रहते तमाहुर्मूढसचेतसम्।।
(विदुर नीति – 1/35)

इस प्रकार विदुर जी स्पष्ट अक्षरों में श्रेष्ठ पुरुष और मूर्ख पुरुष के लक्षणों धृतराष्ट्र के सामने रखते हैं। यह श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ पुरुष के लक्षणों विदुर जी न केवल धृतराष्ट्र के लिए बताया है अपितु आधुनिक समाज के लिए यह अत्यंत प्रासंगिक है क्योंकि इस समय लोगों को वास्तविक ज्ञान का परख नहीं होता है। वह अज्ञान को ज्ञान, अकर्तव्य को कर्तव्य समझकर अनुचित मार्ग पर चल पड़ता है। अतः हमें वास्तविक ज्ञान प्राप्त हेतु हमारे प्राचीन ज्ञानवर्धक पुस्तको की ओर अग्रसर होना चाहिए।

निष्कर्ष

इस आधुनिक युग में लोगों में एक भाव स्वतः प्रकट होता है कि वह श्रेष्ठ पुरुष है। प्रत्येक व्यक्ति श्रेष्ठ पुरुष बनने की इच्छा करता है परंतु वास्तविक रूप में श्रेष्ठता क्या है, इसकी क्या परिभाषा है, इस बात से वे अनभिज्ञ होते हैं।

विदुर नीति एक ऐसा दर्पण है, जो लोगों को उनका वास्तविक स्वरूप दिखता है। समाज के सभी वर्ण–आश्रम वर्ग के लोगों को उनके कर्तव्यों से अवगत करवाता है। वास्तविक रूप में श्रेष्ठ पुरुष कौन है? मूर्ख कौन है? राजा के क्या कर्तव्य हैं? आदि को अपने दर्पण में दिखता है। विदुर नीति आधुनिक समाज का सर्वश्रेष्ठ दर्पण है जिसका नित्यदर्शन हम सभी को वास्तविक ज्ञान प्राप्त हेतु प्रतिदिन करते रहना चाहिए ताकि हम उचित कर्म पर अग्रसर हो सकें।

संदर्भ सूची

1. वेदव्यास, श्लोक 33, प्रथमाध्याय, *विदुर नीति,* (सम्वत् 2075) गीता प्रेस, गोरखपुर।
2. वेदव्यास, श्लोक 50, पंचमध्याय, *स्वर्गारोहणपर्व,* (सम्वत् 2075) गीता प्रेस, गोरखपुर।
3. वेदव्यास, श्लोक 11, प्रथमाध्याय, *विदुर नीति,* (सम्वत् 2075) गीता प्रेस, गोरखपुर।
4. वेदव्यास, श्लोक 16, प्रथमाध्याय, *विदुर नीति,* (सम्वत् 2075) गीता प्रेस, गोरखपुर।
5. वेदव्यास, श्लोक 19, प्रथमाध्याय, *विदुर नीति,* (सम्वत् 2075) गीता प्रेस, गोरखपुर।
6. वेदव्यास, श्लोक 22, प्रथमाध्याय, *विदुर नीति,* (सम्वत् 2075) गीता प्रेस, गोरखपुर।
7. वेदव्यास, श्लोक 24, प्रथमाध्याय, *विदुर नीति,* (सम्वत् 2075) गीता प्रेस, गोरखपुर।
8. वेदव्यास, श्लोक 28, प्रथमाध्याय, *विदुर नीति,* (सम्वत् 2075) गीता प्रेस, गोरखपुर।
9. वेदव्यास, श्लोक 30, प्रथमाध्याय, *विदुर नीति,* (सम्वत् 2075) गीता प्रेस, गोरखपुर।
10. वेदव्यास, श्लोक 32, प्रथमाध्याय, *विदुर नीति,* (सम्वत् 2075) गीता प्रेस, गोरखपुर।
11. वेदव्यास, श्लोक 33, प्रथमाध्याय, *विदुर नीति,* (सम्वत् 2075) गीता प्रेस, गोरखपुर।
12. वेदव्यास, श्लोक 35, प्रथमाध्याय, *विदुर नीति,* (सम्वत् 2075) गीता प्रेस, गोरखपुर।

——==00==——